Time : 3 Hrs. **Marks : 80**

विभाग १ – गद्य

प्र.१ अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

१) संजाल पूर्ण कीजिए।

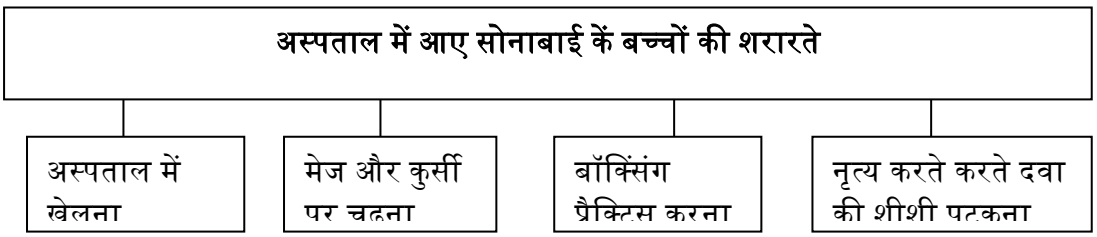

२) i) कारण लिखिए:

अ) लेखक को लगा कि आज फिर कोई दुर्घटना होगी क्योंकि सोनाबाई अपने चार शरारती बच्चों के साथ उन्हें देखने आई थी।

ब) सोनाबाई के अनुसार दवा गिरना शुभ होता है क्योंकि उनका मानना था कि दवा गिरने से बीमारी चली जाती है।

ii) निम्नलिखित गलत विधान सही करके लिखिए:

अ) सोनाबाई की लड़की दवा की शीशी लेकर कथकली डांस करने लगी।

ब) सोनाबाई जाते समय यह कहकर गई कि फिर आऊँगी।

३) i) शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए:

अ) वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पशु – पक्षी रख जाते हैं - चिड़ियाघर

ब) वह स्थान जहाँ रोगियों की चिकित्सा होती है - अस्पताल

ii) शब्द बनाइए:

४) हमारा फर्ज है कि हम एक – दूसरे के सुख – दुख बाँटे। माना कि बीमार व्यक्ति की बीमारी बाँट नहीं सकते लेकिन उसे मिलने जाकर उसका कुछ दर्द कम तो कर ही सकते हैं। इससे मरीज को अहसास होगा कि लोग मेरे साथ है। मरीज से मिलने जाते समय हमें अपने उपर संयम रखना चाहिए। अस्पताल में निर्धारित समय पर ही मरीज को मिलने जाना चाहिए। मरीज से अनावश्यक बातचीत कर उसकी तकलीफ नहीं बढ़ानी चाहिए। जहाँ तक संभव हो छोटे बच्चों को अस्पताल नहीं लेकर जाना ही सही है क्योंकि एक तो इंफेक्शन का डर और दूसरा बच्चों के उछल – कूद से मरीज को तकलीफ होती है। मरीज के आराम का ख्याल रखते हुए वहाँ अधिक समय न बैठना अच्छा होगा। मरीज के साथ दुखभरी बातें करने या आँसू बहाने की जगह हमें शांत और प्रसन्न रहकर मरीज का हौसला बढ़ाना चाहिए। इस तरह समझदारी से परिपूर्ण व्यवहार ही मरीज के लिए हितकारी होगा।

प्र.१ आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

१) संजाल पूण किजिए :

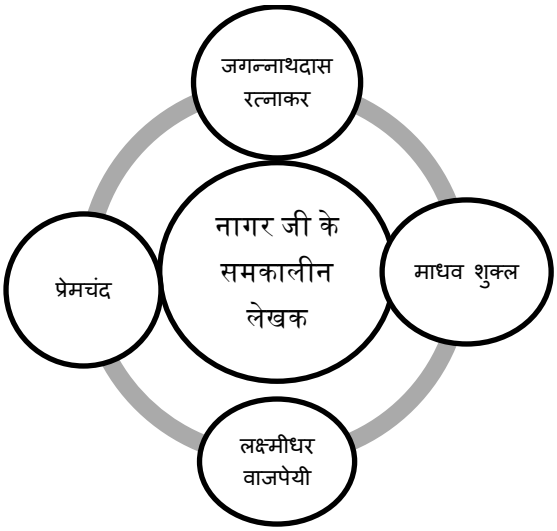

२) कृति पूर्ण किजिए :

i) परिच्छेद में उल्लेखित

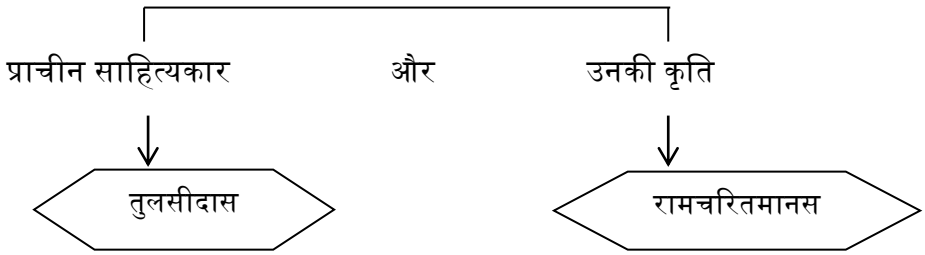

ii)) माधव शुक्ल जी की विशेषताएँ

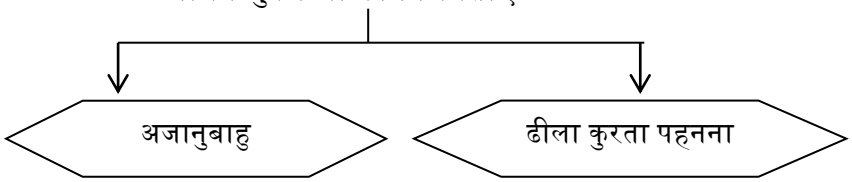

३) विलोम एवं पर्यायवाची शब्द लिखिए:

विलोम	**शब्द**	**पर्यायवाची**
i) सुबह	शाम	संध्या
ii) अनित्य	नित्य	सदा

४) ज्ञान तथा आनंद प्राप्ति का साधन वाचन क्योंकि वाचन करते समय हमारा दिमाग सक्रिय रहता है। किताबों में ज्ञान का अक्षय खजाना है। इन्हें पढ़कर हमें बहुत ज्ञान मिलता है। ये हमारा अकेलापन दूर करती हैं और एक सच्चे मित्र की तरह हमारा साथ देती हैं ।किताबें पढ़ने से हमारे मन का तनाव कम होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण आने लगता है और अपनी इच्छाओं को मनुष्य तर्क की कसोटी पर परखकर देखता है। ऐसा मनुष्य अपनी समस्याओं का समाधान भी सही ढंग से कर लेता है। इसी कारण जो व्यक्ति किताबें पढ़ता है वही दूसरों की अपेक्षा अधिक बेहतर ढंग से जीवन व्यतीत करता है। अत: रोज पढ़ने की आदत बनाकर अपने दिमाग को हमेशा युवा बनाकर रखना चाहिए, अपना शब्दभंडार बढ़ाना चाहिए और अपनी काबिलियत को बढ़ाना चाहिए।

प्र.१ इ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

१) संजाल पूर्ण कीजिए:

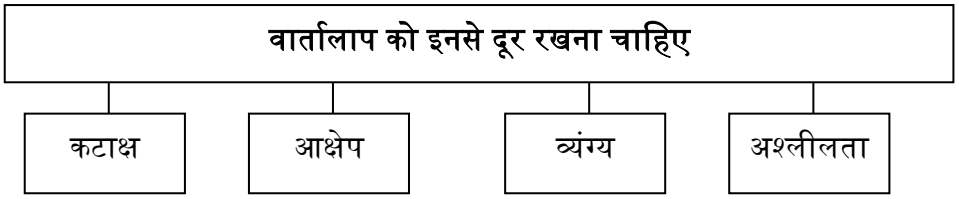

---

२) मनुष्य के जीवन में आचार – विचार, व्यवहार और संस्कारों का अपना ही महत्त्व है क्योंकि वह समाज में रहता है। समाज में विभिन्न प्रकार के व्यक्ति हैं जिनसे उसे बातचीत करनी पड़ती है। अत: बातचीत के शिष्टाचार का पालन अवश्य करना चाहिए। उसे अपनी बात नम्रतापूर्वक किंतु स्पष्ट व निर्भयता से कहनी चाहिए। भाषा में मधुरता, शालीनता व आपसी सद्भावना हो। दूसरों की बात को ध्यानपूर्वक सुनें। किसी की पीठ पीछे निंदा न करें। दो व्यक्ति बात कर रहे हैं तो बीच में नहीं बोलना चाहिए। आत्मप्रशंसा से दूर रहना चाहिए, क्रोध को रोकना चाहिए। शिष्टाचार का पालन जितनी अधिक तत्परता से होगा हमारा व्यक्तित्व उतना ही निखर उठेगा।

विभाग २ – पद्य

प्र.२ अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

१) संजाल पूर्ण कीजिए :

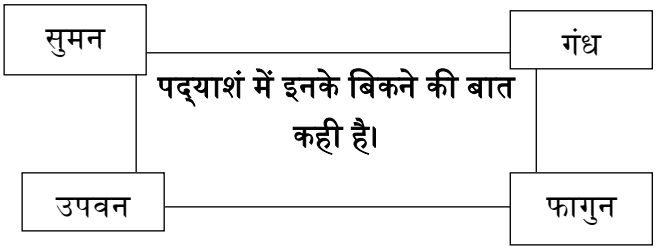

२) सूची बनाइए :

इनका फूल से संबंध –

अ) डाली - गोद में खिलाया ब) कोंपल – अरूणाई दी

क) काँटे – रक्षक बनकर जान बचाई ड) मालिन – पंखुरियों के रिश्ते जुड़े हैं।

३) सरल भावार्थ : - प्रस्तुत पद्यांश बालकवि बैरागी जी की लिखी कविता गंध नहीं बेचूँगा कविता अपनी से लिया गया है। गीतकार यहाँ फूल के स्वभाव की विशेषता बताते हुए कह रहे हैं कि फूल अपनी गंध नहीं बेचता।

फूल का कहना है कि उपवन के सारे फूल बिके या उपवन ही क्यूँ न बिक जाए या फिर फूलों की बहार जिस महीने में होती है ऐसे सैंकड़ों फागुन बिक जाए वह अपनी गंध नहीं बेचेगा। क्योंकी यह गंध ही फूल का स्वाभिमान है जिसे वह कदापि नहीं बेचेगा। जिस पौधें पर यह फूल खिला है उस पौधे की डाली ने उसे गोद में खिलाया है, नई कोमल पत्तियों ने उसे लालिमा दी हैम काँटों ने लछमन जैसी चौकी देकर उसकी जान बचाई है। अत: डाली, पत्तियाँ और काँटे फूल को नोचे, तोड़े फूल को एतराज नहीं है। ये फूल की पंखुरियों का मालिन से रिश्ता जोडे फूल को फर्क नहीं पड़ता पर वह अपनी गंध नहीं बेचेगा। अपने स्वाभिमान को बनाए रखेगा।

प्र.२ आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

१) i) परिणाम लिखिए :

कलियुग का आगमन – धर्म भाग जाता अर्थात नष्ट हो जता है।

ii) निम्न अर्थ को स्पष्ट करने वाली पंक्ति लिखिए :

कपूत के कारण कुल की हानि – जिमि कपूत के उपजे, कुल सद्धर्म नसाहिं ॥

२) i) निम्नलिखित शब्दों से तद्धित बनाइए :

१) चतुर - चतुराई २) विविध – विविधता

ii) पद्याशं में आई विलोम शब्दों को दो जोड़ियाँ ढूँढ़कर लिखिए :

१) कुसंग × सुसंग २) बिनसइ × उपजइ

३) कभी – कभी हवा बड़ी तेजी से चलने लगती है, जिससे बादल जहाँ – तहाँ गायब हो जाते हैं। यह ठीक उसी प्रकार लगता है, जैसे वंश में कुपुत्र के पैदा होने पर कुल के उत्तम धर्म अर्थात श्रेष्ठ आचरण नष्ट होने लगते हैं। कभी – कभी बादलों के कारण दिन में ही अँधेरा हो जाता है और सूर्य के उदित होने पर प्रकाश फैल जाता है । यह परिवर्तन ठीक उसी प्रकार होता है, जिस प्रकार बुरी संगत से ज्ञान खत्म होता है और अच्छी संगत से ज्ञान पैदा होता है।

विभाग ३ – पूरक पठन

प्र.३ अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए ।

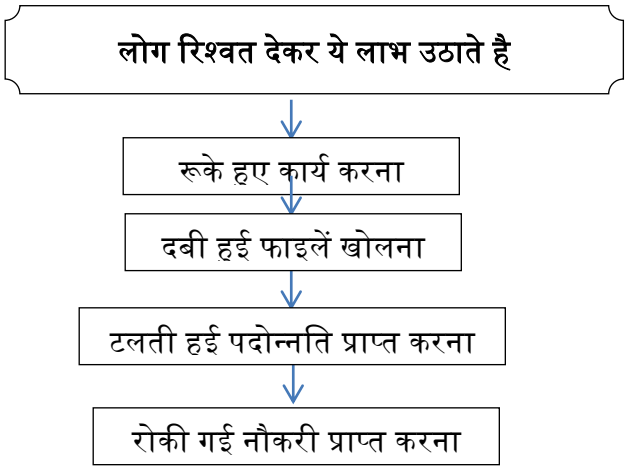

२) प्रशासकिय शिथिलता भ्रष्टाचार की जड़ है। भोगवादी मनोवृत्ति इसकी जननी है। एक असुर की भाँति इसने हर क्षेत्र में उत्पात मचा रखा है। छोटे – बड़े सब इसके चंगुल में फँसे हैं। मुनाफाखोर व्यापारी अपने माल में मिलावट करता है। नकली दवाइयाँ बेचकर मरीज के साथ खिलवाड़ हो रहा है। मंत्रियों के काले कारनामे चर्चा का विषय बने हुए हैं। सत्ता के मोह ने बेशर्मी ओढ़ रखी है। भ्रष्टचारी न्याय खरीद लेता है, कानून को अपनी मुट्ठी में रखता है। भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने वाले जेल में सड़ते हैं और भ्रष्टाचारी मगरमच्छ चैन से जनसमुंदर में विचरण करते हैं। बढ़ती महंगाई, पक्षपात, भौतिक सुखों की लालसा भ्रष्टाचार को कभी खत्म नहीं होने देगी। सरकारी नौकरी पाने के लिए, तबादला करवाने या रोकने के लिए पैसा बहाना अनिवार्य बन गया है। भ्रष्टाचार एक कलंक की तरह समाज की इंसानियत पर दाग बनकर जम गया है।

प्र.३ आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

१) संजाल पूर्ण कीजिए ।

i)

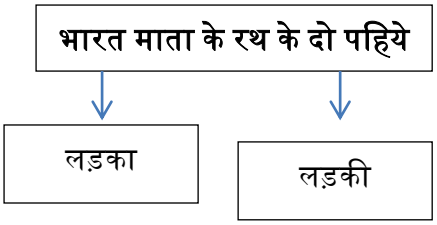

ii)

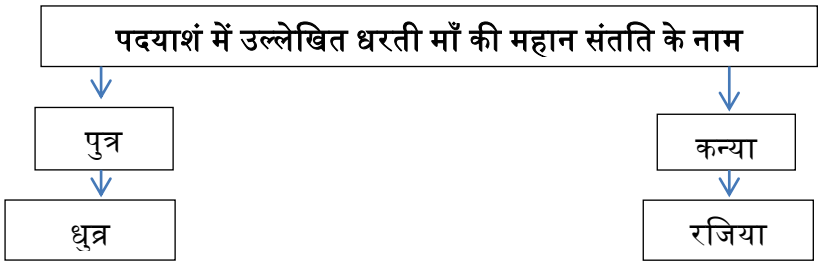

२) प्रस्तुत पद्यांश उमाकांत मालवीय लिखित कब्बालि 'हम इस धरीत की संतति है' कविता से लिया गया है। यहाँ लड़के और लड़कियाँ अपनी – अपनी श्रेष्ठता को लेकर झगड़ते हैं। परंतु अंत में उन्हें एहसास होता है कि हम आपस में टंटा कर रहे हैं जबकि हम इस धरती की संतति हैं। झगड़ा केवल हमारी बातों को और हमारे रिश्तों को उलझाने का काम करता है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि ध्रुव और रजिया दोनों भारत माँ के ही हैं। हम लड़का और लड़की इस भारत माँ के रथ के दो पहिये हैं और ये दोनों पहिये आपसी मेल – जोल के साथ चलेंगे तो ही देश का रथ आगे बढ़ेगा

और देश की उन्नति होगी । पद्यांश से यही संदेश कवि ने हमें देना चाहा है।

विभाग ४ – भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्र.४ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

१) अधोरेखिकित शब्द का भेद पहचानकर लिखिए ।

उँगली - संज्ञा

२) निम्नलिखित अव्ययों में से किसी एक अव्यय का अपने वाक्य में प्रयोग किजिए । (दो में से कोई एक)

अ) अलावा - परीक्षा पास आने पर छात्र को पढ़ाई के अलावा कुछ नहीं सूझता।

ब) ओर – बालक माँ की ओर देखकर मुस्कराया।

३) कृति पूर्ण कीजिए । (दो में से कोई एक)

शब्द	संधि - विच्छेद	संधि – भेद
निश्चल	नि + चल	विसर्ग संधि

अथवा

उन्नति	उत + नति	व्यंजन संधि

४) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक सहायक क्रिया को पहचानकर उसका मूल रूप लिखिए ।

सहायक क्रिया	मूल रूप
पडी	पडना
सकते	सकना

५) निम्नलिखित में से किसी एक का क्रिया प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए ।

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया
दौड़ना	दौड़ाना	दौड़वाना
गाना	गवाना	गववाना

६) निम्नलिकित मुहावरों में से किसी एक मुहावरे का अर्थ लिखकर अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

१) बोलबाला होना – प्रभाव होना वाक्य – आजकल सर्वत्र मंहगाई का बोलबाला है।

२) शेखी बधारना – स्वंय अपनी प्रशंसा करना वाक्य – शेखी बधारने की अपनी आदत के कारण आज सिया मुसीबत में फँस गई है।

अथवा

अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए ।

(एकटक देखना, भनक पड़ना)

दर्शनार्थी मंदिर में देवी जी की मूर्ति को एकटक देख रहे थे।

७) निम्नलिखित वाक्य पढ़कर प्रयुक्त कारकों में से कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए ।

मैंने तय किया कि आज किसी से नहीं मिलूगाँ ।

कारक चिह्न	कारक भेद
से	करण करक

८) निम्नलिखित वाक्य में यथास्थान उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए ।

क्रिकेट खिलाडी की प्राशंसा करते हुए उन्होंने कहा, “एक दिन तुम देश का नाम रोशन करोगे”।

९) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्ही दो वाक्यों का सूचना के अनुसार काल-परिवर्तन कीजिए ।

१) गुरूदेव ने अपने समय पर स्नान कीया था।

२) गोवा में मुझे मेरे पुराने अध्यापक मिले ।

३) बादल पृथ्वी के नजदीक आकर बरसेंगे।

१०) **i) निम्नलिखित वाक्य का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए।**

अनेक वृक्षों में नई – नई कोंपलें आ गई हैं, जिससे वे हरे – भरे तथा सुशोभित हो गए है। - मिश्र वाक्य

ii) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए।

१) जो भी गाय के पास जाता, वह उसे सिर मारने की कोशिश करती।

२) उथला बीच बेनालियम मछुआरों की पहली पसंद है।

११) **निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखिए।**

i) अब हमारी जिंदगी नहीं बचेगी।

ii) राम ने हिरन का शिकार किया।

iii) भाषा ईश्वर की बड़ी देन है।

विभाग ५ – उपयोजित लेखन

प्र.५ अ) सूचना के अनुसार लिखिए।

१) पत्रलेखन

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र-लेखन कीजिए।

i) ८ जुलाई, २०१८

सेवा में,

जिलाधीश महोदय,

पुणे – ४११०४३

(महाराष्ट्र)

विषय : पेड़ – पौधों की अनियंत्रित कटाई।

श्रीमान जी,

मैं इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान पेड़ – पौंधों की अनियंत्रित कटाई ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

अत्यंत दुख व खेद का विषय है कि आज जब चारों ओर अधिक से अधिक वृक्ष लगाने की बात की जा रही है, कुछ ऐसे स्वार्थी लोग भी है जो अपने प्रभाव के द्वारा सफाई के नाम पर वृक्षों को कटवा रहे है।

नगर में सड़कों के दोनों ओर सरकार द्वारा जो वृक्ष लगवाए गए थे, उनमें से अधिकांश कटवाए जा चुके हैं। कुछ समाजसेवी संस्थाओं ने इसे रोकने का प्रयास किया तो उनके साथ मारपीट की गई।

मान्यवर, यदि यह कटाई इसी प्रकार चलती रही तो शीघ्र ही यह क्षेत्र वृक्षों से खाली हो जाएगा। आप से अनुरोध है कि पुलिस तथा सतर्कता विभाग को इस स्थिति से निपटने के आदेश दें।

धन्यवाद सहित,

प्रार्थी,

साहिल देशपांडे

A – 92 दिव्यलोक,

सुभाष चौक, तिलकनगर,

पुणे – ४११००६

xyz@ABC.com

अथवा

ii) 11 अक्तुबर, २०१८

आदरणीय पिता जी,

सादर चरण स्पर्श।

आपका पत्र प्राप्त हुआ। बड़ी प्रसन्नता हुई। यहाँ मेरा मन लग गया है। नए परिवेश में प्रारंभ में तो घर की बहुत याद आती थी, पर अब मेरे कई मित्र बन गए है।

पिता जी, आपने अपने पत्र में मुझसे पूछा है कि मैं भविष्य में क्या बनना चाहता हूँ? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? जब से आपका पत्र मिला, मैं इसी सोच – विचार में हूँ कि मुझे क्या बनना चाहिए? या मैं क्या बनना चाहता हूँ ?

पिता जी, बार बार विचार करने पर मुझे समझ आया कि मुझे डॉक्टर बनना चाहिए। आप जानते ही हैं कि हमारा देश स्वास्थ सेवा की दृष्टि से कितना पिछड़ा हुआ है। प्रतिवर्ष न जाने कितने व्यक्ति चिकित्सा के अभाव में काल का शिकार बन जाते हैं। मुझे सेवा – भाग से ओत – प्रोत यह व्यवसाय बचपन से ही आकर्षित करता रहा है। इसी पेशे को अपनाकर मैं समाज की बहुत अच्छी तरह सेवा कर पाऊँगा, साथ ही एक सम्मानित जीवन भी व्यतित कर पाऊँगा। माता जी को सादर प्रणाम कहीए। पत्र दीजिए।

आपका पुत्र,

विजय भालेराव

२, अनुराग छात्रावास,

महात्मा गाँधी मार्ग,

नागपुर – ४४०००५

xyz@ABC.com

२) गद्य आकलन

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर परिच्छेद में एक-एक वाक्य में हो ।

१) लेखक के अनुसार कौन – सी ईंट धन्य है और क्यों?

२) नींव की ईंट को हिला देने से इमारत पर क्या असर पड़ेगा?

३) इमारत की मजबूती का आधार क्या है?

४) सुंदर सृष्टि क्या खोजती है?

५) समाज को सुदंर बनाने के लिए क्या करना होगा?

आ) सूचना के अनुसार लिखिए ।

१) वृत्तांत – लेखन

२४ जनवरी, २०१८ को मराठा मंदिर पाठशाला, लातुर में वार्षिक पुरस्कार समारोह संपन्न हुआ। समारोह का अध्यक्ष स्थान प्रसिद्ध खिलाड़ी विश्वनाथ आनंद जी ने विभूषित किया। दीप प्रज्वलन के साथ सुबह १० बजे समारोह आरंभ हुआ। सर्वप्रथम पाठशाला के गान पथक ने सरस्वती वंदना और स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

पाठशाला के ज्येष्ठ अध्यापक श्रीमान सावंत जी ने अध्यक्ष महोदय का परिचय दिया और पाठशाला की गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया उसके बाद रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत हुए। प्रदुषण, पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों की प्रस्तुतुयाँ बहुत ही अच्छी लगीं। नारी जीवन पर नृत्य नाटिका द्वारा की गई प्रस्तुति दर्शकों के दिल को छू गई।

तत्पश्चात कक्षा में अव्वल आनेवाले छात्रों को पुरस्कार दिए गए। खेल, भाषण, अभिनय, चित्रकला आदि प्रतियोगिताएँ जीतने वाले छात्रों को भी पुरस्कार दिए गए। पाठशाला के सर्वश्रेष्ठ छात्र को पुरस्कार देते समय उसकी उपलब्धियाँ के बारे में जो बातें बताई गईं सभी ने तालियों की गूँज से उसकी दाद दी।

अध्यक्ष महोदय ने अपने भाषण में सभी छात्रों में सभी छात्रों की भूरी – भूरी प्रशंसा की। छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, आज का युग प्रतियोगिता का युग है। इसलिए हर प्रतियोगिता में बढ़ – चढ़कर हिस्सा लेकर अपने आप को समक्ष बनाइए। आने वाले कल के सुंदर भविष्य के लिए शुभकामना और सुभाशीष दिया। विद्यार्थी प्रतिनिधी ने आभार प्रदर्शित किया और प्रधानाचार्य जी ने अगले दिन छुट्टी की घोषणा की तब पूरे पंडाल में आंनद की लहर दौड़ गई। राष्ट्रगान के साथ इस शानदार समारोह का समापन हुआ।

अथवा

कहानी लेखन

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग ७० से ८० शब्दों में कहानी लिखकर उससे मिलने वाली सीख लिखिए व उसे उचित शीर्षक दीजिए

जहाँ चाह, वहाँ राह

धर्मपूर गाँव के किनारे राधा – कृष्ण का एक विशाल व भव्य मंदिर था। धर्मपुर के अलावा आस – पास के लोग भी उस मंदिर में दर्शन करने आते थे। उस मंदिर के सामने ही एक भिखारी भीख माँगता था। रोजाना आने – जाने वाले भक्तों द्वारा उसे कुछ - न – कुछ मिल ही जाता था। इसी तरह उसका जीवन्यापन हो रहा था।

उसी मंदिर में एक व्यक्ति रोज आता था। वह रोज उस भिखारी को देखता था। वह यहीं सोचता था कि कैसे इस भिखारी की मदद की जाए। एक दिन उसे एक उपाय सूझा। उसने मंदिर आते समय फूल बाजार से गुलाब के फूलों का एक गुच्छा खरीद लिया। मंदिर पहुँचकर उसने वह फूलों का गुच्छा उस भिखारी को देते हुए उसके कान में कुछ कहा। उसकी बातें सुनकर भिखारी के मन में जैसे एक नया उत्साह आ गया। उसने दूसरे ही क्षण उसी जगह पर उन फूलों को रखकर बेचना शुरू कर दिया।

दिन के अंत तक उस भिखारी ने सारे फूल बेच लिए थे और उसे उनसे अच्छी आमदनी भी हुई। उन्हीं पैसों से उसने फूल बाजार से और फूल खरीदे और मंदिर के सामने बेचने लगा। अब वह भिखारी इसी तरह रोज फूल खरीदकर बेचने लगा। फूलों के इस व्यापार से उसे बहुत लाभ हुआ और उसने धीरे – धीरे पैसे इकट्ठा करके उसी मंदिर के सामने एक दुकान खोल ली। आगे चलकर वह फूलों का बड़ा व्यापारी बन गया, लेकिन वह युवक के परोपकर को कभी नहीं भूला।

सीख : - यदि हम जीवन में कुछ करने की चाह रखते हैं, तो उसके लिए रास्ते अपने – आप खुल जाते हैं।

२) विज्ञापन लेखन

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर ५० से ६० शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए ।

वसुंधरा नर्सरी

तरह – तरह के हरे – हरे पौधे ले जाइए,
अपने आँगन व परिसर में हरियाली फैलाइए।

हमारे यहाँ कई तरह के फूल, फल व सब्जी के पौधे मिलेगें साथ ही २५ प्रकार के गुणकारी पौधे सैकड़ों की संख्या में उपलब्ध हैं। पौधों के अलावा आप बीज, खाद व गमले भी खरीद सकते हैं।

मुफ्त ! मुफ्त ! मुफ्त !

दस पौधे खरीदने पर एक पौधा मुफ्त ।
तो आज ही आइए और इस अवसर का लाभ उठाइए।

पता : वसुंधरा नर्सरी, रघुनाथ रोड, सातारा ।
संपर्क : ९०४५८२१३६
ई – मेल – आईडी : vasundhara@xya.com

३) निबंध लेखन

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग ८० से १०० शब्दों में निबंध लिखिए ।

१) **विज्ञान के चमत्कार**

यदि १८५६ की क्रांति ने भारत को स्वर्णिम स्वतंत्रता प्रदान की है तो वैज्ञानिक क्रांति ने लोगों को अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाने में योगदान दिया है। चिकित्सा, मुद्रण, संचार, यातायात, शिक्षा आदि क्षेत्रों में अभूतपूर्व उन्नति की है। आज विज्ञान ने हमें

'बहुभौतिक साधन, यंत्र, यान वैभव महान।
सेवक है विद्युत बाष्प शक्ति धन बल नितांत।'

ऐसा बहुत कुछ देकर हमारे जीवन को सुख-सुविधाओं से संपन्न किया है। पंचमहाभूतों को मानव ने जैसे अपने वश में कर लिया है। 'जिज्ञासा' विज्ञान की जननी है। मानव ने जिज्ञासा के कारण प्रकृति के रहस्यों को जानना चाहा। आग जलाना सिखा तो पाषाण युग से आगे बढ़ा और उसके सामाजिक जीवन की शुरुआत हुई। चक्र के आविष्कार के बाद तो उसके विकास की गाडी कभी रुकी ही नहीं। उसने उमड़ते समुंदर पर चलना सीखा। वह पंछियों की तरह आसमान में उडने में कामयाब हुआ। उसने चाँद की धरती पर कदम रखा। विश्व के गूढ़ रहस्यों की एक-एक परत खोलकर वह उसके निर्माण के रहस्य को जानना चाहता है। जिस दिन वह इस रहस्य को जान जाएगा उस दिन वह अपनी नई दुनिया का सर्जन कर लेगा और जगत का सर्जनहार बन जाएगा!

विज्ञान ने हमारे दैनिक जीवन में अनंत सुविधाएँ प्रदान की हैं। पंखा, फ्रिज, वॉशिंग मशीन, मिक्सर, ज्यूसर आदि साधनों के द्वारा घर-गृहस्थी के काम आसान हो गए हैं। सैकड़ों लोगों का काम और घंटों का काम मिनटों में संगणक कर देता है। आजकल तो बिना चालक की गाड़ी और हवाई जहाज चलाने की बात पर चर्चा है। यंत्र मानव बनाने में वैज्ञानिक सफल हो गया है। एक गुलमा की तरह वह मनुष्य के इशारे पर दौड़ेगा बिना थके.....! जब उसे अपने काम करवाने के लिए ऐसा 'जीन' मिल गया तो जादुई चिराग की जरुरत ही क्यों रही?

चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान ने नई क्रांति लाई है। अंग-प्रत्यंग का रोपन करने की कला जानने के बाद तो उसने मौत को भी हरा दिया है। कई बीमारियाँ अब उसकी परेशानी नहीं बन पाती क्योंकि उसने उनके टीके बनाकर पहले से ही उनके विरुद्ध मोर्चाबंदी कर ली है। टेस्ट ट्युब में संतान को पैदा करने में उसने कामयाबी हासिल कर ली है। धरती के गर्भ में छिपे खनिजों को ढूँढ़ना उसके लिए मुश्किल नहीं है। मौसम को भी वह बदल सकता है। अपनी मर्जी से बरसात करा सकता है। देश की सुरक्षा के लिए तरह-तरह के अस्त्र-शस्त्र बना सकता है। आण्विक अस्त्रों का सफल परीक्षण उसकी ताकत बढ़ा रहा है। सारा विश्व सिमट कर छोटा हो गया है। अपने उपग्रहों को अवकाश में स्थापित कर मनुष्य विश्व की हलचल पर नजर रखे हुए है। इन सब को हम चमत्कार नहीं तो और क्या कहेंगे?

२) **फूल की आत्मकथा**

रंगों की पहचान हूँ मैं'
बसंत ऋतु की शान हुँ मैं
ईश्वर का वरदान हूँ मैं'

सुगंध मेरी आत्मा है। हवा के झोंकों के साथ मैं संसार भर में विचरण करता हूँ और संसार को महका देता हूँ। खुशी हो या गम आपका साथ अवश्य देता हूँ, पहचाना मुझे? मै हूँ गुलाब का एक फूल।

अनगिनत काँटों के ऊपर खिला हूँ। काँटों की चुभन की एक शिकन तक मेरे चेहरे पर नहीं। रंग, रुप, गंध में मुझे मात देनेवाले अन्य फूल भी हैं परंतु फूलों का राजा मुझे बनाया गया। जानते है क्यों? आप मनुष्यों में से एक भले इंसान को काँटों का ताज पहनाया गया और वह आप सबका मसीहा बन गया। अब मुझे बताइए काँटों का ताज पहनना और काँटों के सिंहासन पर बैठना, चुभन कहाँ अधिक होगी? रेगिस्तान में जहाँ पशु-पक्षी, मनुष्य सब अपना होश हवास खो बैठते हैं वहाँ भी मेरी हँसी में कोई अंतर नहीं पड़ता। इसीलिए फूलों की दुनिया का बादशाह मैं हूँ।

इस छोटी सी आयु में अपना जीवन सार्थक बनाने की चाह मुझमें भी है। मेरी पंखुडियों से गुलकंद बनाया जाता है। गुलाब जल और इत्र बनाने के लिए भी मैं काम आता हूँ। तुम बच्चों के चाचा नेहरु जी के सीने पर शान से बैठता था मैं। ईश्वर के मस्तक पर या चरणों पर मुझे चढ़ाया जाता हैं। परंतु मैं तो वनमाली से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे तोड़कर उस पथ पर फेंक दे जिस पथ पर मातृभूमि के लिए कुरबान होने शहीद चलते हैं। उनके पैरों तले कुचले जाने पर भी मैं स्वयं को भाग्यवान समझूँगा।

आप सभी को यही कहना चाहता हूँ कि, 'मुक्त जीवन की प्रगति भी द्वंद्व में संघात में' अर्थात संघर्ष ही जीवन है। जबतक संघर्ष करते रहोगे जीवन में प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते रहोगे। जिस दिन संघर्ष खत्म हो जाएगा उस दिन

से पतन शुरु हो जाएगा। मैं स्वयं डाली पर कड़ी धूप, पवन के झोंके सहते हुए प्रसन्न रहता हूँ और दुसरों को भी प्रसन्न करता हूँ। पर मुझे तोड़ देने पर इन संघर्षों से जब मुक्ति मिलती है तब मुरझाकर जीवन का ही अंत हो जाता है। अपने इस जीवन से जो मैंने सीखा वही आपको समझाने की यह छोटी सी कोशिश मैंने की है।

३) **पानी की समस्या और उपाय**

कवि रहीम की उक्ति 'बिन पानी सब सून' अक्षरशः सत्य है। बिना पानी के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। जहाँ पानी है, वहीं जीवन है। पृथ्वी ही ऐसा अभी तक का ज्ञात ग्रह है, जहाँ पानी है और समुचित मात्रा में है। पृथ्वी का करीब तीन-चौथाई भाग पानी से घिरा हुआ है। अन्य ग्रहों जैसे – शनि, बृहस्पति, मंगल या फिर चंद्रमा पर जीवन के कोई लक्षण नहीं, क्योंकि वहाँ पानी नहीं है।

विडंबना यह है कि भारत जो पवित्र नदियों की भूमि कहलाता है, उसी देश को पानी की विकट समस्या से जूझना पड़ रहा है। हमारे देश में हजारों गाँव ऐसे हैं, जहाँ लोग पीने तक का पानी दूर-दूर से लाकर काम चलाते हैं। गर्मियों में तो और भी बदतर हालत हो जाती है। सरकारी आँकड़ों में तो ९० प्रतिशत जनसंख्या को पानी उपल्ब्ध है, लेकिन सर्वेक्षण करने पर पाया गया है कि केवल ३० प्रतिशत जनसंख्या ही उसका लाभ उठा पाती है। इसके अलावा जहाँ कहीं सरलता से पानी उपलब्ध है भी, तो वह प्रदूषित होता है।

सवाल यह उठता है कि आखिर इतनी विपुल जल-राशि के होते हुए भी हमारे सामने पानी की इतनी गहरी समस्या क्यों उठी है?

इस समस्या का सबसे बड़ा कारण है- दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से बढ़ती जनसंख्या। उसकी भौतिक आवश्यकताओं और भोगवादी प्रवृत्ति ने ही इस समस्या को जन्म दिया है। औद्योगीकरण ने पानी का जबरदस्त दोहन तो किया ही है, उसे प्रदूषित करने में भी सबसे आगे रहा है। कल- कारखानों का गंदा पानी नदियों में बहाए जाने की मूर्खता का ही दंड है, जो आज मनुष्य शुद्ध पानी की बूँद- बूँद को तरस रहा है। फसल की ज्यादा पैदावार के लिये कृत्रिम खादों का बढ़ता प्रयोग तथा कीटनाशक दवाएँ जमीन को खराब तो कर ही रही हैं, जमीन के अंदर के पानी को भी विषाक्त बना रही है।

मनुष्य ने पेड़ों पर कुल्हाड़ी चलाते समय यह नहीं सोचा कि वह अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है। पेड़ बारिश के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करते हैं। बारिश के पानी तथा भूमि-क्षरण (soilerosion) को अपनी जड़ों के द्वारा बहने से रोकते हैं। पेड़ों को काटने की मूर्खता कही परिणाम है कि कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ की विभीषिका का रौद्र रूप दिखाई पड़ता है।

इस समस्या से निपटने के लिए सबसे पहले जरूरी यह है कि वर्षा के जल को हम व्यर्थ न जाने दें। उसे संचित करने की दिशा में जरूरी कदम बढ़ाएँ। तालाब, कुएँ आदि का ज्यादा से ज्यादा निर्माण हो। वृक्षारोपण व्यापक पैमाने पर हो। हर बिल्डिंग की छतों से बारिश का पानी सीधे जमीन के अंदर जाए। इसके लिए भी योजना बनाकर क्रियान्वित की जाए। जमीन के अंदर पानी ज्यादा से ज्यादा जाएगा, तो पानी का स्तर बढ़ेगा और नलकूपों द्वारा पानी की माँग को पूरा किया जा सकेगा। वाटर हार्वेस्टिंग का प्राचीन और नया दोनों रूप पानी के संचयन के लिए फायदेमंद है। नदियों का पानी स्वच्छ बना रहे, इसके लिए कल कारखानों के पानी की निकासी का अलग प्रबंध किया जाना चाहिए। ये कार्य व्यक्तिगत, सामाजिक तथा राष्ट्रीय सभी रूपों में व्यापक पैमाने पर हो, तभी सफल हो सकेगा। प्रकृति ने हमें जो जीवन का आधार दिया है, उसका कृतज्ञ होते हुए उसका संरक्षण करें तथा प्रदूषित होने से बचाएँ, इसी में हमारी भलाई है।

अगर हम अब भी इस दिशा में जागरूक नहीं हुए, तो आनेवाली स्थिति कितनी विकट हो सकती है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जल ही बचपन है जल ही यौवन है; न जलाओ जल को जल ही जीवन है।